Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

मनमोहन गुप्ता "मोनी" के कथा साहित्य "उस दिन माँ कहाँ रहेगी" में नारी के विविध आयाम

Dr. Darshana Devi*

Phd in Hindi

सार – ***नारी का वर्तमान भारतीय समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान है। नारी को गृह लक्ष्मी कहा जाता है और वास्तव में नारी घर की शोभा/लक्ष्मी होती भी है। मोनी जी द्वारा रचित इस कहानी संग्रह में नारी को माँ के रूप में पत्नी के रूप में बेटी प्रेमिका एवं अन्धविश्वासी आदि के रूपों में चित्रित किया गया है। मोनी जी के साहित्य में नारी के विविध आयामों का वर्णन मिलता है।***

----------X----------

परिचय:-

मनमोहन गुप्ता "मोनी" जी हरियाणा के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार है। उनका जन्म **18** मई **1958** को अम्बाला छावनी में हुआ था। उनके पिता जी श्री कृष्ण गोपाल गुप्ता जोकि केन्द्र सरकार की नौकरी में थे। उनकी माता जी श्रीमति राजरानी एक गृहणी थी। मनमोहन जी जब कॉलेज में पढ़ते थे उन्हीं दिनों उनके पिता जी का देहान्त हो गया था। मोनी जी का बचपन सामान्य रहा लेकिन पिता जी की मृत्यु के बाद उन्होंने आंशिक आर्थिक संकट को भी झेलना पड़ा। मोनी जी बचपन से ही नाटकों में भाग लेने लग गए थे। मोनी जी अपने अध्ययन काल में ही साहित्य लेखन में व्यस्त हो गए थे। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी कविताएं एवं कहानियां जालंधर के समाचार-पत्रों में छपनी शुरू हो गई थी। बी. कॉम की पढ़ाई पूरी करने के बाद मोनी जी ने पत्रकारिता की पढ़ाई की और आज पत्रकारिता एवं अपनी योग्यता के बल पर दैनिक ट्रिब्यून चण्डीगढ़ में वरिष्ठ उप-संपादक के पद पर कार्यरत है।**1**

मोनी जी का हिन्दी साहित्यकारों में प्रमुख स्थान है। उन्होंने अनेक कविताएं, कहानियां, नाटकों एवं उपन्यासों की रचना की है। मोनी जी रचनाओं में सामाजिकता का सचिव चित्रण मिलता है। इनकी पहली कहानी अन्तिम-पत्र **2** थी जोकि दैनिक वीर-प्रताप में **25** अगस्त **1979** को प्रकाशित हुई थी। इस कहानी के छपने के साथ ही आपका आत्मविश्वास बढ़ता गया और श्री श्याम मोहन भटनागर जी की प्रेरणा से लगातार लिखना जारी रखा। मोनी जी ने अब तक तीन कहानी संग्रह गली न**0 5** कच्ची अमिया वाला पेड़ एवं उस दिन माँ कहाँ रहेगी है। मोनी जी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता सामाजिकता एवं उनका जुझारू रूप है। उनकी कहानियों के पात्र समाज के दमन और शोषण के दो पाटों में भिंचकर -पिसकर भी व्यवस्था से टकराने को तैयार हो जाते है।

उस दिन माँ कहाँ रहेगी:-

"उस दिन माँ कहाँ रहेगी" नामक कहानी संग्रह मोनी जी की प्रसिद्ध कथा साहित्य है। इस कहानी संग्रह में सात कहानियां हैं। इन सातों कहानियों में सामाजिक बोध एवं नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण दिखाई देता है। ये सभी कहानियां सम-सामयिक हैं। यह कहानी संग्रह विद्या पुस्तक सदन, शिव मार्केट (प्रथम तल) न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली से प्रकाशित है। इस कहानी संग्रह में "पापा गन्दे हैं" "उस दिन माँ कहाँ रहेगी" "पीपल सूखा नहीं है" "एक बड़ा परिवर्तन" "कान्ति भाई का तबादला" "बाजार में भी नहीं" तथा लाल मुनिया नामक कहानियां शामिल हैं। इन सभी कहानियों के माध्यम से मोनी जी ने आधुनिक नारी के विविध आयामों का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है।

1. माँ के रूप में:-

नारी के विविध रूपों में माता का स्थान सर्वोच्च है। सभी प्राचीन वेद-पुराणों व आधुनिक रचनाओं में नारी के इस रूप की महिमा का गुणगान किया गया है। माँ के रूप में नारी विशाल हृदय, ममतामयी, समस्त सृष्टि के प्यार को अपने बच्चों पर न्यौछावर करने वाली होती है। बिन्दु अग्रवाल जी का मत है पत्नी का पद पाकर नारी के व्यक्तित्व का विकास अवश्य होता है पर उसके जीवन की सच्ची सार्थकता और

www.ignited.in

पूर्णता तभी होती है जब वह माँ बनती है। मोनी के साहित्य मे नारी के माँ के रूप का विवरण कई स्थानों पर किया गया है। "उस दिन माँ कहां रहेगी" नामक कहानी में माँ की विवशता को दर्शाया गया। अपने पति की मौत के बाद एक माँ अपने दोनों बेटों को पढ़ा-लिखाकर उन्हें नौकरी आदि भी लग जाने के बाद एक दिन ऐसी स्थिति आ जाती है कि दोनों भाई अपनी माँ का बंटवारा करना चाहते है।

यह कहानी एक निम्न वर्गीय परिवार की कहानी है। जिसमें उस दुःखी माँ का वर्णन किया गया है जो अपने पुत्रों से दुःखी रहती है। माँ का यह रूप आज हम अपने समाज में हर घर या गली मोहल्ले में देख रहे हैं। माँ को याद आता है कि जब उसके दोनो बेटे छोटे थे तो पिता जी को कितना तंग करते थे और उन्हें घोड़ा बनाकर उनके ऊपर बैठने की जिद्द करते थे। परन्तु आज उन दोनों को जन्म देने वाली माँ ही बोझ लगने लगी है।

माँ के रहने का फैसला भी हो गया था। यह तय कर लिया गया कि माँ महीने में **15** दिन दूसरे बेटे के पास---दोनों बच्चों (पौत्रों) ने माँ के **15-15** दिन रहने वाली बात सुनी। बिट्टू से रहा नही गया। वह अपनी बाल-सुलभ बुद्धि से पूछने लगा, किसी महीने मे **31** दिन भी तो होतें है। उस एक दिन माँ कहाँ रहेगी |

2. पत्नी के रूप में चित्रणः-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य के जीवन में पत्नी का बहुत अधिक महत्व है। पत्नी परिवार की आधारशिला होती है। पत्नी के अभाव में परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती। पति-पत्नी जीवन-रूपी गाड़ी के दोपहियों के समान हैं अर्थात दोनों एक-दूसरे के पूरक है। मोनी जी के साहित्य में अनेक स्थानों पर पत्नियों का विवरण मिलता है। कान्ति भाई का तबादला नामक कहानी में पत्नी अपने पति पर शक करती है कि उसका किसी और औरत के साथ भी सम्बन्ध है। उन्होंने जानकी का हाथ पकड़ लिया-तुम चुप क्यों हो तुमने बोलने-लायक छोड़ा ही कहाँ यह कहकर उसने पर्स खोला और एक टेलीग्राम निकालकर कान्ति भाई की और बढ़ा दिया।

"यह टेलीग्राम आया था। तुम्हें देने आई थी।" कान्ति भाई ने टेलीग्राम खोला और पढ़ने लगे "सन बॉर्न मदर एक्सपायर्ड, कम सून।"**3**

3. पुत्री के रूप में:-

प्राचीन समय से ही भारतीय समाज पुरूष प्रधान है। लेकिन वर्तमान काल में बेटी का महत्व भी कम नही रहा है। वेद व पुराणों में पुत्री को लक्ष्मी का रूप माना जाता है। लेकिन यह भी सत्य है कि आज भी बेटी की बजाय बेटे को अधिक महत्व दिया जाता है। मोनी जी के साहित्य में वर्णित पुत्री रूप दर्शाया गया है। "पापा गन्दे है" नामक कहानी में राधिका अपने पिता की एक लाड़ली बेटी है। अन्तरिक्ष (पापा) उससे बहुत अधिक प्यार करता है। माँ बार-बार अपनी बेटी को सफाई से रहने के बारे में समझाती है। "बेटे" घर को गंदा नही करते। देखो अंकल क्या सोच रहे होंगे कि राधिका का घर कितना गन्दा है। बहुत अच्छी है हमारी राधिका प्यारी सी राधिका**4** कई बार माता-पिता का ज्यादा प्यार बच्चों का बिगाड़ देता है। जब गलती करने पर पापा राधिका को डांट देता है। तो वह चुपचाप स्टोर में चली जाती है। श्रेष्ठा राधिका को लाने के लिए उठी ही थी कि अन्तरिक्ष ने उसे आवाज लगा दी "राधिका आओ"। लेकिन राधिका उनकी आवाज पर नहीं आई। राधिका ने स्टोर की दीवार पर लिख दिया था-पापा गन्दे है।**5**

फिर कुछ दिनों के बाद राधिका बीमार हो जाती है। एक दिन राधिका की हालत इतनी बिगड़ गई कि डॉक्टरों को कहना पड़ गया कि इसका बचना मुश्किल है और हुआ भी वही।

राधिका की मृत्यु के बाद अन्तरिक्ष और श्रेष्ठा की दुनिया वीरान हो गई। अब दोनों की शामें राधिका की याद में कटती हैं। राधिका द्वारा दीवार पर लिखा वाक्य – "पापा गन्दे हैं" अब अन्तरिक्ष के लिए किसी पूंजी से कम नहीं था।

4. बहन के रूप में:

परिवार में बहन का स्थान भी बड़ा आदरणीय होता हैं। उसे परिवार या वंश की इज्जत माना जाता है। बहन के बचपन से लेकर शादी तक हर कोई उसका ध्यान रखता है। प्रत्येक सदस्य उसे हर समय कुछ-न-कुछ सिखाने की कोशिश में रहता है। ताकि वह एक समझदार नारी बन सके। मोनी जी ने अपनी कहानी "एक बड़ा परिवर्तन" में नमिता बहन का वर्णन किया है। नमिता अपनी माँ और भाई सन्दीप की लाडली बहन है। सन्दीप कहता है अम्मा जी नमिता को सर्वाधिकार वाला सदस्य मानती थी। वह शुभा की ननद है और ननद भी इकलौती, जिसके अनगिणत अधिकार है, कत्र्तव्य नहीं। यानि की भाई या भाभी ने जरा-सा भी कुछ कहा नहीं कि वह सीधी अम्मा जी गोदी में मुँह छिपा लेगी और घंटो सुबकती रहेगी।**6**

सन्दीप माँ को समझाना चाहता है कि वह अपनी बहन नमिता को थोड़ा बहुत काम करने दे। सन्दीप की पत्नी भी सन्दीप को सचेत करती है कि वह अपनी बहन को काम करने बारे बताए। आपसे तो यह भी नहीं सोचने की हिम्मत कि मेरे बुखार में तपने के बाद भी नमिता से कह सको कि नमिता चल भाभी के साथ बर्तन धुला लें नहीं क्योंकि उसके अधिकार

असीमित हैं। उसका अधिकार है बुरा मानने, चुपचाप चारपाई पर बैठकर खाने का, आपके कानों में खुसर पुसर करने का और बात बेबात मुझे ताने देने या दिलवाने का।

इस प्रकार नमिता को लेकर घर में काफी तनाव बढ़ जाता है। अन्त में अम्मा जी समझ जाती है कि घर में मेहमान बनकर नहीं परिवार का एक सदस्य बनकर रहना अधिक उचित है।

5. प्रेमिका के रूप में:-

मानव जीवन में प्रेम का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक ऐसा अवसर अवश्य होता है जब उसके मन में प्रेम का भाव पैदा होता है। पत्नी की स्थिति एवं प्रेमिका की स्थिति में जमीन-आसमान का अन्तर है। पत्नी को अद्र्धागिंनी या धर्मपत्नी कहा जाता है। समाज में प्रेमिका को कभी नैतिक स्वीकृति प्रदान नहीं की जाती। फिर भी प्रेमिका मानव जीवन में किसी न किसी रूप में अवश्य रहती है। हिन्दी साहित्य में प्रेम का विवरण बहुत अधिक मिलता है। अधिकांश लेखकों ने प्रेम का ऐसा सजीव वर्णन किया है मानों वे स्वयं एक बड़े प्रेमी रहे हो। मोनी जी के कथा साहित्य उस दिन माँ कहाँ रहेगी मै प्रेम का वर्णन बहुत अधिक मिलता है। मैं वहां पहुँचा तो उसने मुझे बताया कि वह नन्हा सा पीपल ले आई है। और उसने आम के पेड़ की जड़ के पास रखा वह पीपल का पौधा दिखा दिया। अब सरिता यह जिद्द कर रही थी कि इसे दोनों मिलकर लगाएँगे। हम दोनों ने नन्हा पीपल सरिता के घर के आंगन में लगा दिया। सरिता की दिनचर्या में पीपल को पानी देना भी शामिल हो गया था**7** उसमें मेरी दिलचस्पी एकमात्र कारण था। उसका गांव और उसी गांव की सरिता अभी भी उसी गांव में अकेली रहती है। उसने शादी नहीं करायी। माँ-बाप भी नहीं रहे। ..... एक दिन मैंने सरिता को एक पत्र लिख ही दिया जिसमें उसके परिवार के बारे में जानना चाहा था। यह भी पूछा था कि उसने विवाह क्यों नहीं किया और भी कई बातें उससे जानना चाही थी। यह भी पूछा था कि उसके आंगन में लगा पीपल का पेड़ कैसा है काफी समय बाद कार्यालय में ही सरिता का एक पत्र मिला केवल एक पंक्ति का। पत्र में कोई सम्बोधन नहीं था और न ही कोई हस्ताक्षर थे। केवल लिखावट से ही जान पाया था कि इसे सरिता ने ही लिखा होगा। पत्र में यही लिखा था **–** "पीपल सूखा नहीं है।"

निष्कर्ष:-

अन्त में कहा जा सकता है कि मनमोहन गुप्ता "मोनी" जी की सभी कहानियों में कहीं पर भी कृत्रिमता दिखाई नहीं देती है, बल्कि प्रत्येक कहानी में उनका एक आंतरिक गुण हमारे सामने उजागर होता है। उनकी सभी कहानियों में जो नारी के विविध आयामों को चित्रित किया गया है, वह सम्पूर्ण समाज के लिए एक आईना है। उनकी कहानियों में नारी की समस्याओं, संघर्ष एवं विभिन्न विकट परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति, सभी महिलाओं के लिए एक प्रेरणा का काम करती है। ये कहानियाँ समय का कच्चा चिट्ठा हमारे सामने उजागर करती है। अन्त में हम कह सकते है कि मोनी जी की सभी कहानियां पाठकों पर अपना अमित प्रभाव छोड़ने में सफल हैं।**8**

सन्दर्भ सूची:

1. मनमोहन गुप्ता "मोनी जी" से व्यक्तिगत भेंट
2. दैनिक वीर प्रताप समाचार पत्र।
3. उस दिन माँ कहाँ रहेगी पेज **–** 52
4. कान्ति भाई का तबादला कहानी पेज **–** 17
5. पापा गन्दे हैं कहानी 40
6. पापा गन्दे हैं कहानी 45
7. एक बड़ा परिवर्तन कहानी पेज 33-34
8. पीपल सूख नहीं कहानी पेज 60

Corresponding Author

Dr. Darshana Devi*

Phd in Hindi

narender.vats85@gmail.com

www.ignited.in